

शनि आरती



दुर्गाबाड़ी
Durgabari

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी ।

सूर्य पुत्र प्रभु छाया महतारी ॥ जय... ॥

श्याम अंग वक्र-दृष्टि चतुर्भुजा धारी ।

नी लांबर धार नाथ गज की असवारी ॥ जय... ॥

क्रीट मुकुट शीश राजित दिपत है लिलारी ।

मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी ॥ जय... ॥

मोदक मिष्ठान पान चढत हैं सुपारी ।

लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी ॥ जय... ॥

देव दनुज ऋषि मुनि सुमिरत नर नारी ।

विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी ॥ जय... ॥